MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

Prof. Rajani Shikhare

MULTIDISCIPLINARY RESEARCH - Prof. Rajani Shikhare

Publisher	:	Anand Prakashan, Jaisingpura, Aurangabad.(M.S) Cell : 9970148704 Email: anandprakashan7@gmail.com
©	:	Author
Typeset At	:	Anand Computer Aurangabad.
Edition	:	December 2020
ISBN No	:	978-93-90004-07-2
Cover Design	:	Aura Design Mumbai.
Printed At	:	Om Offset Aurangabad.
Main Distributor	:	Anand Book Depot Jaisingpura, Aurangabad - 431004
Price	:	₹ 120 /-

MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

INDEX

Sr.No	Title	Page. No
01.	विनय मिश्र की ग़ज़लों में राजनीतिक चेतना - **प्रो.रजनी शिखरे**	07-09
02.	संत साहित्य में विवस्था का विरोध - **राजाराम बाबासाहेब जाधव**	10-12
03.	स्वातंत्र्योत्तर भारत की विसंगतियो का महत्वपूर्ण दस्तावेज : 'पूरब खिले पलाश'-**संतोष नागरे**	13-17
04.	होय ! लेखक घडवता येऊ शकतो - **डॉ. समाधान इंगळे**	18-21
05.	अण्णाभाऊ यांची लोकनाट्ये - **डॉ.संदीप अ.बनसोडे**	22-26
06.	"आधुनिक कुटूंब व्यवस्थेतील नाते संबंधातील द्वंद्वावर भाष्य करणारे नाटक - नथिंग टु से" - **डॉ. संदिप बनसोडे**	27-29
07.	Realism In R.K.Narayan's Novel The GUIDE' - **Dr.V.S.Bandal**	30-38
08.	Absurd Elements in Harold Pinter's The Birthday Party, The Caretaker and The Homecoming. - **Jadhav Arun Malhari**	39-41
09.	Global and International Evidence-Based Library Activities and Demand of Health Librarians - **R.B. Pagore**	42-52
10.	Study of Second ARCs view on Police Reforms. - **Hanmant B.Helambe**	53-57
11.	Capital Formation In Agricultural Sector - **Mr B. S Jogdand**	58-61
12.	'Farmer suicide a social problem' - **Mr. R. B. Kale**	62-66
13.	The Role of Opposition Party In Indian Democracy. - **Dr. S.N. Satale**	67-71
14.	Impact of E-Commerce in Rural India - **Dr. Waykar Vivek**	72-77
15.	A Study of Commercial Agriculture: Issues and Challenges before ancestor agriculture in India. - **Sandip B. Vanjari**	78-82
16.	Synthesis, Characterization and Antimicrobial Analysis of Some New Pyrimidines Containing Pyrazole Moiety. - **Amol J. Shirsat*, Balaji D. Rupnar, Sunil S. Bhagat**	83-88

3

स्वातंत्र्योत्तर भारत की विसंगतियो का महत्वपूर्ण दस्तावेज: 'पूरब खिले पलाश'

संतोष नागरे
सहा. प्रा.-हिंन्दी विभाग
र.भ.अट्टल महाविद्यालय,
गेवराई जि.बीड
Email - nagresantosh1@gmail.com

व्यंग्य आधुनिक साहित्य की एक महत्वपूर्ण गद्य विधा है। जिसकी प्रतिष्ठ स्वांतत्र्योत्तर काल में हुई। यद्यपि वह प्राचीन काल से साहित्य में किसी ना किसी रुप में विद्यमान रहा है। सत्य, संवेदना, स्पष्टवादिता, करुणा, विडम्बना, विसंगति, विद्ग्धता, विक्षोभ, प्रहार और सुधार की भावना व्यंग्य के प्रमुख तत्व हैं। व्यंग्यकार समाज जीवन में व्याप्त विसंगतियों पर प्रहार के माध्यम से हमें झकझोरकर चिंतन की स्थिति में पहुँचा देता है। व्यंग्य का उद्देश्य मात्र परिहास एवं उपहास ना होकर सामाजिक प्रतिबध्दता के तहत समाज की बेहतरी के लिए किया गया सही दिशादर्शन है। डॉ. सुरेशसिंह यादव इस संदर्भ में ठीक ही कहते हैं, - 'व्यंग्य बुराइयों से लड़नेवाला अहिंसक हथियार है। यह व्याक्ति और समाज में वयप्त बुराइयों से उत्पन्न प्रहारात्मक अभिव्यक्ति है। जिसके मूल में सुधार और परिवर्तन की भावना होती है।'[१]

हिन्दी व्यंग्य साहित्य की जमीन तौयार कर उसे लोक -प्रियता के शिखर पर पहुँचाने में हरिशंकर परसाई, शरद जोशी, श्रीलाल शुक्ल, डॉ. बन्नारसीदास चतुर्वेदी, लतीफ घोंघी, नरेंद्र कोहली, डॉ. शंकर पुणतांबेकर, सयर्बाला, प्रेम जनमेजय, रवीन्द्रनाथ त्यागी आदि का महत्वपूर्ण योगदाना है। रवीन्द्रनाथ त्यागी जी नो कविता, कहानी, उपन्यास के साथ व्यंग्य विधा में अपनी कलम चलाकर उसकी लोकप्रियता में चार-चाँद लगाए। 'पूरब खिले पलाश' रवीन्द्रनाथ त्यागी व्दारा चुनी हुई अपनी सौ व्यंग्य रचनाओं का संकलन है। जो भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली से सन १९९८ में प्रकाशित हुआ। जिसमें उन्होंने स्वांतत्र्योत्तर भारत की राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, शौक्षिक एवं साहित्यक स्थितियों को आईना दिखाते हुए अपने समकालीन परिदृशी को बेनकाब किया है। विषय - वैविध्य से भरी 'पूरब खिले प्रकाश' स्वांतत्र्योत्तर भारत की विसंगतियों का महत्वपूर्ण दस्तावेज है। डॉ. धनंजय वर्मा इस सन्दर्भ में ठीक ही कहते हैं, - 'अपनी उनमुक्त उड़ाना और मन की 'अनियनिति दशा' के कारण रवीद्रनाथ त्यागी का रचना-संसार काफी विविध और व्यापक है। घर-परिवार, यार-दोस्त, प्रेमी- प्रेमिका, नौकर-चाकर, और रोज -मर्रा की जिन्दगी के आम पात्रों और स्थितियों से लेकर एक व्यापक सामाजिक अकर्मणीता, पारम्पारिक रुढीयों की मोहविष्टता, अफसरशाही, सार्वजनिक विघटन, महँगाई, घूस, भ्रष्टाचार, बेकारी, विधान- सभाओं की जूतापौचार,मंत्री, नेता और प्रतिपक्ष की राजनीति की नीतिहीनता और अवसरवाद, अतिनौतिक अखबार, छात्र-आन्दोलनों की दिशाहीनता, अध्यापकों की संकीर्णता और शोधकायी की निस्सारता - गरज यह कि स्वतंत्रता के बाद के भारत की पूरी संक्रानित

और हासयास्पदता उसमें उभरती है और जीती जा रही जिन्दगी के विविध स्तरीय अंतर्विरोध और असंगतियाँ उघड जाती हैं। त्यागी जी खुद कवि भी हैं और साहित्य की राजनीति के दर्शक, शायद भोक्ता भी हों। इसीलिए उनके व्यंग्य में हिन्दी साहित्य का समकालीन परिदृश्य भी खुलता है, सम्पादकों, प्रकाशकों और साहितिकारों की अवसरवादिता, साहित्य की राजनीति और आन्दोलनों से फैली अराजकता, आलोचक और व्यख्याकारों की स्वेच्छाचरिता, लेखकों की छपास प्रचारप्रियता, स्वैराचार और चार्यावृतति - गरज यह कि साहित्यक दुनिया की उठा- पटक, छीन-छपट, ले-लपक, गुटबाजी और फिरकापरस्ती-सभी कुछ।'[२]

स्वांतत्र्योत्तर भारत की विसंगतियों का यथार्थ चित्रण रवीन्द्रनाथ त्यागी जी की व्यंग्य रचना में पाया जाता है। १५ अगस्त, १९४७ को देश स्वतंत्र हुआ और हमने प्रजातंत्र अपनाया । प्रजा पर तंत्र हावी हो जाने से वह मात्र भाडतंत्र बनकर रह गया है। रवीन्द्रनाथ त्यागी कहते हैं, - 'इस देश की यह नियति है कि यहाँ प्रजातंत्र है। चुनाव के पहले प्रजा शक्तिशाली रहती है और चुनाव बीतते ही प्रजा यानी कि हमारे देश की करोडों जनता - भाड़ में चली जाती है और तनत्र जो है वह सबसे अधिक शक्तिशाली हो जाता है।'[३] प्रजातंत्र के मूलतत्व-स्वतंत्रता न्याय, समता एवं बंधुत्व के साथ खिलवाड करनेवाले नेता, अफसर, पुलिस अधिकारी, व्यापारी, राजनीतिक पेंशनर, तथाकथित बुध्दिजीवी वर्ग ने प्रजातंत्र को भाड़तंत्र बना दिया। दुर्भाग्य से २६ जनवरी गणतंत्र दिवस की शोभयात्रा की झाँकियों मौं यही लोग सबसे आगे होते हैं। रवीन्द्रनाथ त्यागी इस सन्दर्भ में कहते हैं, - 'देखो भाई, अब आप सँभलकर बैठ जाओ। इस बार जो झाँकी आ रही है वह आंतकवादियों की हैं और उन आर्थिक अपराधियों की है जिनका धन विदेशी खातों में जमा है। क्या कभी ऐसा दिन भी आएगा कि इनकी झाँकी के बिना भी गणतंत्र दिवस की परेड़ राजपथ पर निकलेगी?[४] ' हमारा देश कभी कृषिप्रधान माना जाता था। अंग्रेजी सरकार और आजादी के बाद हमारी अपनी सरकार नो उसे धर्मप्रधान बना दिया। धर्म के नाम पर प्रजा को आपस में लड़वाकर वे अपनी कुर्सी बचाते रहे। आजादी के बाद इस देश में कुत्ता संस्कृति विकसित हुई। अपने मालिक के इशारे पर भौंकने और काटनेवाले अंधभक्तों की पोल खोलते हुए रवीन्द्रनाथ त्यागी कहते हैं, - 'इन बडी-बड़ी इमारतों में न जाने कितने कुत्ते मेज-कुरसियों पर बैठे हैं और वे काम कर रहे हैं जो अगर वे आदमी होते तो कभी नहीं कर सकते थे। वे मालिक के कहने पर भौंकते हैं और उसी के कहने पर काटते हैं। वे अपनी जुबान नहीं समझते, उनकी अपनी कोई जुबान है ही नहीं। जो उनका मालिक कहता है वही किया जाता है, चाहे वह हड़ताल हो या दंगा। कितनी दिलचस्प बात है कि यह नुमाइश रोज होती है और हम लोगों की नजर उस और कभी नहीं पडती।'[५]

आजादी के पश्चात यह सारी विकृतियाँ गाँव तक पहुँच गई। साम्प्रदायाकता की आग से गाँव झुलस गई। गाँव में बस्त़ी अपराधिक गतिविधियाँ और उसमें रक्षकों तथा जनप्रतिनिधियों की सहभागिता के चलते गाँव तबाह हो गई। रवीन्द्रनाथ त्यागी इस सन्दर्भ में कहते हैं, - 'चोरी और छेड़छाड के स्थान पर सामूहिक डकैती व सामूहिक बलात्कार होते थे और कभी-कभी तो इस विकास योजना में पुलिस के लोग भी सहायता करते थे। शर्त बस इतनी थी की लड़की किसी हरिजन की हो ओर जवान होने के साथ-साथ हसीन भी हो। गाँवों में साम्प्रदायकता के चिह्न भी दिखाई दियो जिससे मेरे भावुक मनको बड़ा धक्का लगा। जो काम कायदे आजम नहीं कर पाया, वह चुनाव के भूखे भेडिंयो ने कर दिखाया। लगता है कि प्रेमचंद का गाँव भी उन्हीं के साथ चला गया।'[६] आजादी के पश्चात गाँव का चित्र और चरित्र काफी बदल गया। भौतिक विकास के चलते मानवीय मूल्यों का -हास हुआ। गाँव में अमराई की जगह अब कॉलेज खुल गया है। कदली वन और ढाक वनी में ग्राम पंचायत बन जाने से अब वहाँ चकबनदी के मुकदमे तय होते हैं। प्रेमचंद

का होरी धनिया को छोड़कर बम्बई गया तो नागार्जुन वाली रतिनाथ की चाची बाबा बटेसरनाथ के साथ भाग गया है। रेणु के हीरामन ने हीराबाई से शादी कर ली है तथा अब वह शहर के परिवार नियोजन केन्द्र में नौकरी करती है। प्रकृति प्रेमी सुमित्रानंदन पंत की प्रकृति विकृति में तब्दील हो गही है। ग्राम जीवन की बदलती इस तस्वीर से आहत रवीन्द्रनाथ त्यागी 'भारतमाता ग्रामवासिनी' में कहते हैं - 'वे उड़हल, कुँई, केनर, लोघ, पाटल, हरासिंगार, मौलश्री और कुनदकाँस कहाँ गई? वह नदी कहाँ गये।, जिसकी रेत पर बालू के साँप अंकित रहते थे? वे अमलतास, सहजन और पलाश कहाँ छिप गये? वे खत्म हो गई। नहर निकल जाने से नदी सूख गई। आलू और सेब की खेती के सिलसिले में वन कट गये। इस चिमनी के धुँए और पों-पों की आवाज ने पीलों के दलों को डरा दिया। वे अब इधर नहीं मँडराते। ग्रामवासिनी और तरुतलनिवासिनी वह भारतमाता कहाँ गये? वह एक विकास खण्ड अधिकारी के साथ कहीं चली गई। ऐसी गये कि फिर कभी नहीं लौटी।'[७]

विकास के नाम पर विकास अधिकारियों ने भारतमाता का विनाश किया। किसानों की बढती आत्महत्याएँ इस अतिरेकी विकासधारा का ही परिणाम है। रवीन्द्रनाथ त्यागी इस सन्दर्भ में कहते हैं, - 'जमींदारो के मिट जाने के बाद किसानों पर अत्याचार करने की जिम्मेदारी सरकार ने खुद सँभाल ली। अब पटवारी, कानूनगो, तहसीलदार और ग्रामविकास अधिकारी वे सारी जिम्मेदारी सँभालते हैं, जो कभी जमींदार और जागीरदार सँभालते थे।'[८]

आजादी के पश्चात आम-आदमी की समसयाओं को लेकर सिर्फ बहस होती रही अत: समसयाएँ ज्यों-की-त्यों बनी हुई है। सरकारी यत्रणा विकासधारा को मीटिंग और फाईल में उलझाए रखने में माहिर है। मीटिंग की फलनिष्पत्ति पर प्रहार करते हुए रवीन्द्रनाथ त्यागी कहते हैं, - 'जब किसी मुद्दे पर बहस करते-करते हालत यह हो जाए कि तन्वंगी फाइल एक गर्भवती महिला की छटा देने लगे और मुद्दा फिर भी वहीं-का-वहीं रहें जहाँ कि वह पहले थे।'[९] मीटिंग के साथ लालफीताशाही तथा फाइल तंत्र के चलते भ्रष्टाचार का काला साम्राज्य दिनो-दिन बढता जा रहा है। ऑडिट और भ्रष्टाचार को एक दूसरे से बल मिल जाने से वह फल-फूल रहा है। रवीन्द्रनाथ त्यागी कहते हैं, - 'स्वाधीनता के बाद जितना विकास ऑडिट और भ्रष्टाचार का हुआ है उतना और किसी पदार्थ का नहीं हुआ। कहीं-कहीं तो शायद एक दूसरे को बल भी मिला है।'[१०] भ्रष्टाचार गली से लेकर दिल्ली तक फैला है। सभी मिल बाँटकर खा रहें हैं अत: कोई उसके विरुध्द आवाज नहीं उठाता। भ्रष्टाचार के लिए 'चनदा', 'बख्शीश', 'दस्तूर', और 'रिश्वत' आदि पर्यायवाचक शब्द होते हुए भी उनके बीच सूक्ष्म अंतर है। जिसे अधोरेखित करते हुए रवीन्द्रनाथ त्यागी कहते हैं, - 'सरकार में जो काला धन मनत्री जी को दिया जाता है वह पार्टी के वास्ते दिया गया 'चनदा' माना जाता है। जो पैसा चपरासी को मिलता है वह 'बख्सीश' कहलाती है। ऊपर का जो पैसा बाबू लोग लेते हैं वह 'दस्तूर' कहकर पुकारा जाता हैं। अन्त में चलकर जो काला धन अफसर ग्रहण करता है वह रिश्वत कहलाता है। जैसा कि अपने देखा होगा इस देश में रिश्वत जो लेते हैं वे सिर्फ अफसर ही लेते हैं। उनके अतिरिक्त कोई दुसरा व्यक्ति चाहते हुए भी रिश्वत नहीं ले सकता।'[११]

आजादी के सत्तर साल बाद भी याहाँ का सर्वहारा वर्ग अपनी प्राथमिक जरुरतों को पूर्ण करने के लिए संघर्षरत है। इस कृषिप्रधान देश की चालीस प्रतिशत जनता दारिद्र्य रेखा के नीचे जीवन जीने के लिए विवश है। इस देश का एक वर्ग खाने के लिए रोटी नसीब न होनो से परेशान है तो दूसरा 'डायटिंग' से। रवीन्द्रनाथ त्यागी इंडिया और भारत के बीच की इस दूरी को बेनकाब करते हुए कहते हैं, - 'विवाह के पूर्व 'डेटिंग' व विवाह के बाद 'डायटिंग' अबला जीवन की तो हाय,अब यही कहानी शेष रह गई है। न आँचल का दूध रहा और न नेत्रों का जल।'[१२] जो स्थिति रोटी की है

लगभग वही कपड़ों की है। एक वर्ग तन ढँकने के लिए तो दूसरा अपने गोपनीय अंग सबको दिखाने के लिए कपड़ा पहनता है। पैबन्द लगे वस्त्र पहनाना तो आज फैशन बन गई है। रवीन्द्रनाथ त्यागी कहते हैं, - 'जिन कपड़ों पर जितने ज्यादा पैबन्द लगे होते है,वे उतने ही ज्यादा कीमती माने जाते हैं।'[१३] इस देश के बहुसंख्यक लोगों के पास अपना कोई घर न होने से वे बेघर अवस्था में जीवन जीने के लिए विवश है। बाजारीकरण के इस दौर में शिक्षा मँहगी होती जा रही है। पढ लिखा सुशिक्षित वर्ग नौकरी की तलाश में भटक रहा है। उसके हाथों में न कोई काम है न जीवन में राम। ऐसे बेकार युवाओं की समसयाओं के समाधानके लिए कुछ रचनात्मक कार्य करने की सलाह देते हुए रवीद्रनाथ त्यागी कहते हैं, - 'जहाँ तक लडकों का प्रश्न है मेरी सलाह है कि कुछ रचनात्मक कार्य करें। रेल की पटरी उखाडना, सरकारी बसें जलाना, डाकखाने लूटना, पुलिस के साथ हाथापाई करना - यह सभी कुछ रचनात्मक कार्यो की परिधि में ही आता है। बडी बात यह है कि इन क्षेत्रों मे अभी इतना काम होनें को पड़ा है की आपके बेकार रहने का तो प्रश्न ही नहीं उठ सकता।'[१४] इस देश के आम-आदमी को स्वास्थ सेवाएँ भी आसानी से उपलब्ध नहीं हो पाती। डॉक्टर और मरीज के बीच शोषक और शोषित का पवित्र रिश्ता है। मरीज को अस्पताल में दाखिल करते ही डॉक्टरों व्दारा जो लूट की जाती है उसे बेनकाब करते हुए रवीन्द्रनाथ त्यागी कहते हैं, - 'अस्पताल उस जगह का नाम होता है जहाँ आदमी बीमारी की हालत में दाखिल होता है और मुर्दा होकर बाहर निकलता है। अस्पताल में जाकर उसकी बीमारी हमेशा के लिए दूर हो जाती है। बीमारी दूर करना ही अस्पतालों का लक्ष्य होता है।'[१५]

आजादी के बाद सरकार आम आदमी की जरुरतों को पूर्ण करने की अपेक्षा उन्हें धर्म, क्षेत्रायता, जाति, वर्ण भाषा के नाम पर आपस में लड़वाकर अपनी स्वार्थ सिध्दि में लगी हुई है। 'फूट डालो राज करो' सरकार की इस नीति का पर्दा-फाश करते हुए रवीन्द्रनाथ त्यागी कहते हैं, - 'अपने दफतर में धर्म, प्रान्तीयता, जाति,वर्ण और भाषा के आधार पर खूब गुटबनदी चलाना। हिन्दुस्तानी बनने से उत्तर प्रदेश के निवासियों को क्या मिल गया? याद रखो यदि हमें जीवन में आगे बढऩा है तो हमें गुजराती, मराठी, पंजाबी, बंगाली या दक्षिण भारतायों में से कुछ-न-कुछ बनना ही पडेगा।'[१६] आजादी के बाद अपनी वोट बैंक के लिए भाषावाद को बढावा दिया गया । राष्ट्रीय एकात्मता कायम रखने तथा स्वतंत्रता दिलाने में जिस हिंदी भाषा का महत्वपूर्ण योगदान है वह आजादी के सत्तर साल बाद भी इस देश की राष्ट्रभाषा नहीं बन पायी। मातृभाषा के साथ किये जा रहे इस बलात्कारपूर्ण दुर्व्यवहार के खिलाफ आवाज उठाते हुए रवीन्द्रनाथ त्यागी कहते हैं-' हिंदी हमारी मातृभाषा है। वह माता के तुल्य है। अपनी माता के साथ ऐसा 'बलात्कार' बहुत अभद्र है। सरकार हिंदी के लिए सब कुछ कर रही है। बड़े-बड़े लोग हिंदी सीखने विदेश भेजे जा रहे हैं, विभिन्न समारोहों के लिए भारी-भारी अनुदान दिये जा रहे हैं और तुकबनिदयाँ करनेवालों तक को 'पद्मश्री' से अलंकृत किया जा रहा है। क्या 'विधि मंत्रालाय' मातृभाषा के साथ किये जा रहे इस बलात्कार के खिलाफ कोई कानून नहीं बना सकता?'[१७] जो स्थिति भाषा की वही साहित्य की भी है। साहित्य का काम समाज को जगाना और उसे सही दिशा दिखाना है। दुर्भाग्य से साहित्य के इस धनधे में राजनीति ने प्रवेश कर उसके पावित्य को नष्ट कर दिया है। आलोचकों, संपादकों एवं प्रकाशकों की आपसी गुटबाजी के चलते अब जनता को सुलानेवाले तथा सरकार की हाँ-में-हाँ मिलानेवाले तीसरे दर्जे के साहित्यकारों को ही पुरस्कारों से सम्मानित किया जाता है। रवीन्द्रनाथ त्यागी इसकी पोल खोलते हुए कहते हैं, - 'साहित्य का धनधा भी इधर काफी कठिना हो गया है। एवार्ड उनहें मिलते हैं जिनके पीछे अज्ञेय जी का हाथ है, राज्यसभा में वे जाते हैं, जिनके पीछे प्रधानमंत्री का सहारा है और विदेश वे जाते हैं जो पाँच-पाँच कार रखते हुए भी 'प्रगतिशील' है। जो विशुध्द साहित्यकार हैं, वे वहीं है जहाँ निराला उन्हें छोड गाये थे :- मैं अलक्षित हूँ, यही कवि कह गया हैं।'[१८]

अपने समसामयिक परिवेश में फैले अंधकार से रवीन्द्रनाथ त्यागी दुखी है तभी तो वे कहते हैं,- 'देश में जो अंधकार फैला है वह अमावसया के अंधकार से कहीं ज्यादा ठोस है।'[१९] इस अंधकार से लड़ते हुए रवीन्द्रनाथ त्यागी जी का स्वर कहीं पर भी हताशा एवं निराशा का नहीं है।' दीवाली फिर आ गयी' इस व्यंग्य में दीपक जलाकर समाज में फैले अंधकार को मिटाने के लिए रवीन्द्रनाथ त्यागी प्रतिबध्द दिखाई देते हैं। अपनी इसी प्रतिबध्दता के कारण रवीन्द्रनाथ त्यागी हमेशा याद किये जायोंगे। डॉ.धनांजय वर्मा इस संदर्भ में ठीक ही कहते हैं, - 'जैसा कि मैंने पहले कहा, हास्य,व्यंग्य, विट-किसी भी भाषा की जीवन -शक्ति और पौरुष का लक्षण हैं। इस मामले में हिन्दी की नामर्दी और स्त्रैणता का इलाज करनेवाले जिन चनद लेखकों की भूमिका है उनमें रवीद्रनाथ त्यागी को भुला पाना मुश्किल होगा।'[२०]

सारांश :

व्यंग्य में समाज सुधार की भावना अन्तर्निहित होती है। व्यंग्यकार स्वस्थ एवं खुशहाल समाज के लिए मेहतर बन अपनी व्यंग्य रुपी झाडू के माध्यम से समाज जीवन में व्यप्त गंदगी को साफ करता है। इसीकारण देश के चित्र और चरित्र निर्माण में व्यंग्यकार की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अपनी इसी महत्वपूर्ण भूमिका का सफल निर्वहन करते हुए रवीन्द्रनाथ त्यागी जी ने 'पूरब खिले पलाश' के माध्यम से स्वांतत्र्योत्तर भारत की विसंगतियों का बेबाक चित्रण किया है। कुल मिलाकर 'पूरब खिले पलाश' स्वांतत्र्योत्तर भारत की विसंगतियों का महत्वपूर्ण दस्तावेज है।

संदर्भ :

१) डॉ.सुरेश सिंह यादव, हिन्दी कथा साहित्य में व्यंग्य के रंग, पृ.३२
२) रवीन्द्रनाथ त्यागी, पूरब खिले पलाश, भूमिका पृ.०९
३) रवीन्द्रनाथ त्यागी, पूरब खिले पलाश, पृ.३९९
४) वही, पृ. ३१४
५) वही, पृ.१४२
६) वही, पृ.३८३
७) वही, पृ.३८
८) वही, पृ.२७०
९) वही, पृ. २७४
१०) वही, पृ.२५६
११) वही, पृ.२७१
१२) वही, पृ.३२३
१३) वही, पृ.३५९
१४) वही, पृ.११२
१५) वही, पृ.२७२
१६) वही, पृ.१३६
१७) वही, पृ.२०६
१८) वही, पृ.१४०
१९) वही, पृ.३६४
२०) वही, भूमिका पृ.१०